

यज्ञोवीत में श्रीकृष्ण का मातृ-स्नेह

एक प्रेमी-(प्रेम से प्रणाम कर) मेरे प्यारे मिठले बाबल साईं ! मैं सन्त सद्गुरुदेव के चरण कमलों में प्रणाम करके बाहरी संसार को छोड़कर अपने हृदय के मन्दिर में गया । अरे ! यह तो मथुरा का राजमहल है । बड़ी धूम-धाम मच रही है । बाजे बज रहे हैं । स्त्रियाँ गीत गा रहीं हैं । ब्राह्मण मन्त्रोच्चारण कर रहे हैं । उग्रसेन आदि बड़े-बड़े यदुवंशी भी पधारे हुए हैं । आज क्या बात है ? ओहो ! आनन्दकन्द श्रीब्रजचन्द प्यारे का आज यज्ञोपवीत संस्कार है । यह देवकीमैया बैठी हैं, यह रोहिणी मैया है । रनिवास में कैसा उत्साह, कैसा हर्षोल्लास खेल रहा है ? वे हैं ब्रह्मचारी वेष में प्यारे श्रीकृष्णकन्हैया ! पीली-लँगोटी, पीली कछौली, पीला जनेऊ, हाथ में भिक्षा की पीली झोली, साँवले सलौने अंगपर पीलेपन की भी क्या अद्भुत छटा है ? ब्राह्मणों ने कहा-“बेटा अपनी मैया से भिक्षा ले आओ ।” श्यामसुन्दर तो केवल यशोदामैया को ही मैया के रूप में जानते हैं । सभीत मृगशिशु के समान उनके नेत्र सब ओर दौड़ गये । परन्तु हाय ! हाय प्राणप्यारे, नन्ददुलारे यशोदामैया के नयन-तारे लालन को अपनी स्नेहमयी, मैया तो कहीं दीखती ही नहीं । मैया के लाड़ले शिशु को नवनीत से भी कोमल हृदय पिघल गया । भरी सभा में “मैया, मैया” कहकर पुकार उठे । “मैया, तू कहाँ छिप गयी ? मैया, तेरे मन में कितनी लालसा, कितनी अभिलाषा थी कि मैं अपने लल्ला को जनेऊ कराऊँगी । मेरे लाला जब

पीली लँगोटी पहनकर, ब्रह्मचारी वेश में पहले-पहल मेरे समाने भिक्षा की झोली फैलावेगा तो मैं उसे रत्नों से भर दूंगी । मैं आज से पढ़ने के लिये गुरुकुल को चला जाऊँगा । भिक्षा न सही, मुझे अपने चरणों की धूलि दे दे । मैया, क्या तू मुझ परदेसी बालक को गोद में न लेगी ? कितने दिनों से तूने मुझे कलेऊ नहीं कराया । माखन मिश्री नहीं खिलाया ।” ऐसा कहते-कहते प्यारे मोहन के नेत्रों से आँसुओं की झड़ी लग गयी । हाथ से झोली और दण्ड गिर गया । मैया देवकी ने दौड़कर गोद में ले लिया फिर भी प्यारे मोहनके नेत्रोंसे आँसुओं के मोती ढुलकते ही रहे । (प्यारे कन्हैयाकी यह व्याकुलता देख-सुनकर सारी सभा रोने लगती है) मेरे धैर्य का बांध टूट गया । रोते-रोते अचेत हो गया । उसी समय कृपानिधान श्रीस्वामीजी प्रकट हो गये और मुझे ढाँढस बँधाकर कहने लगे कि ‘प्यारे कन्हैया, कभी मैया से अलग होते हैं ? देखो, देखो यह मैया यशोदा की गोद में लाला खेल रहा है ।’

मैने देखा, न मथुरा है, न राजमहल, न जनेऊ । लाला तो नन्द गाँवमें मैया की गोदमें खेल रहा है । मैं हर्षसे विभोर हो उठा ।